



NEERAJ®

संघर्ष समाधान और शांति स्थापना (Conflict Resolution and Peace Building)

B.P.S.E.- 146

**Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers**

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Harmeet Kaur



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

संघर्ष समाधान और शांति स्थापना (Conflict Resolution and Peace Building)

Question Paper—June-2024 (Solved)	1
Question Paper—December-2023 (Solved)	1
Question Paper—June-2023 (Solved)	1
Question Paper—December-2022 (Solved)	1
Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved)	1-2

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
--------------	-----------------------------------	-------------

संघर्ष : सैद्धांतिक संरचना (Conflict: Theoretical Constructs)

1. संघर्ष एवं अवधारणा	1
(Meaning and Concept of Conflict)	
2. संघर्ष के स्रोत	12
(Sources of Conflict)	
3. संघर्ष के प्रकार और स्तर	24
(Types and Levels of Conflict)	
4. संघर्षों के सिद्धांत	37
(Theories of Conflict)	

संघर्ष प्रबंधन (Conflict Management)

5. संघर्ष समाधान के तरीके	50
(Methods of Conflict Resolution)	

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
6.	सरकार और नागरिक समाज की भूमिका (Role of Government and Civil Society)	58
7.	अंतर्राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय संगठनों की भूमिका (Role of International and Trans-national Institutions)	75
शांति की स्थापना (Peace Building)		
8.	शांति : अर्थ एवं महत्त्व (Meaning and Significance)	87
9.	दृष्टिकोण..... (Approaches)	96
10.	संघर्ष के बाद के पुनर्निर्माण और पुनर्वास (Post-Conflict Construction and Rehabilitation) (Case Studies – Local, Sub–National and International)	107
समसामयिक शांति पहल (Contemporary Peace Initiatives)		
11.	अंतर-धार्मिक संवाद (Inter-Faith Dialogue)	120
12.	शांति पहल (Peace Initiatives)	131



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

संघर्ष समाधान और शांति स्थापना
(Conflict Resolution and Peace Building)

B.P.S.E.-146

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-I

- प्रश्न 1. संघर्ष क्या है और इसके विभिन्न चरण क्या हैं?
उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-4, प्रश्न 1
- प्रश्न 2. किंवसी राइट द्वारा वर्गीकृत संघर्षों के प्रकार और उनकी विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।
उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-29, प्रश्न 4
- प्रश्न 3. संघर्ष के प्रमुख सामाजिक संरचनात्मक सिद्धांतों का परीक्षण कीजिए।
उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-44, प्रश्न 8
- प्रश्न 4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-
(क) दण्ड का भय
उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-13, 'सजा का खतरा'
तथा पृष्ठ-16, प्रश्न 3, 'सजा का खतरा'
(ख) सामाजिक डार्विनवाद
उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-40, प्रश्न 3, 'डार्विनवाद
और सामाजिक डार्विनवाद'

भाग-II

- प्रश्न 5. शान्ति बनाए रखने में नागरिक समाज के महत्त्व का परीक्षण कीजिए।
उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-100, प्रश्न 4
- प्रश्न 6. विश्व शांति के निर्माण में गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका की व्याख्या कीजिए।
उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-79, प्रश्न 3
- प्रश्न 7. अंतरधार्मिक संवाद के महत्त्व पर चर्चा कीजिए।
उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-128, प्रश्न 5
- प्रश्न 8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए-
(क) स्वेज संकट
उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-76, 'स्वेज संकट
(1956) तथा पृष्ठ-84, प्रश्न 3 (3. स्वेज का संकट)
(ख) सम्पूर्ण क्रान्ति
उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-133, 'संपूर्ण क्रान्ति'



QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

संघर्ष समाधान और शांति स्थापना
(Conflict Resolution and Peace Building)

B.P.S.E.-146

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक खण्ड से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-I

प्रश्न 1. हिंसक और अहिंसक संघर्षों के बीच अंतर कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-5, प्रश्न 3

प्रश्न 2. अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष में विभिन्न प्रकार के खतरों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-16, प्रश्न 3

प्रश्न 3. 'प्रकृति बनाम पोषण' बहस का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-37, 'मानवीय प्रकृति और संघर्ष' तथा पृष्ठ-40, प्रश्न 2

प्रश्न 4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) मानव आवश्यकता सिद्धांत

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-39, 'मानवीय आवश्यकताओं का सिद्धांत', पृष्ठ-44, प्रश्न 8, 'मानवीय आवश्यकताओं का सिद्धांत'

(ख) सापेक्ष अभाव सिद्धांत

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-44, 'सापेक्ष अभाव का सिद्धान्त'

इसे भी देखें-समाजशास्त्री सैमुअल स्टॉफर ने सापेक्ष वंचना शब्द गढ़ा। उन्होंने सापेक्ष वंचना सिद्धांत की खोज तब की जब वे द्वितीय विश्व युद्ध के सैनिकों और पदोन्नति मिलने की संभावना के बारे में उनकी भावनाओं का अध्ययन कर रहे थे।

सापेक्ष अभाव मनोविज्ञान का एक उदाहरण तब है जब किसी को क्रिसमस पर आईफोन मिलता है। शुरू में, वे अपने उपहार से खुश होते हैं, जब तक उन्हें पता नहीं चलता कि उनके दोस्त को क्रिसमस पर नई कार मिली है। अब, तुलना करें तो, फोन रखने वाला व्यक्ति वंचित महसूस करता है।

खण्ड-II

प्रश्न 5. मास मीडिया के महत्त्व और संघर्ष समाधान में इसकी भूमिका की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-62, 'मीडिया और शांति स्थापना' तथा पृष्ठ-65, प्रश्न 4

प्रश्न 6. जीन शार्प के रणनीतिक अहिंसा के विचारों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-136, 'जीन शार्प (1928-2018)' तथा पृष्ठ-140, प्रश्न 8

प्रश्न 7. अंतर्राष्ट्रीय शांति बनाए रखने में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका का परीक्षण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-78, प्रश्न 1 तथा अध्याय-8, पृष्ठ-88, 'अंतर्राष्ट्रीय शांति प्रणालियाँ'

प्रश्न 8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-
(क) बर्मिंघम अभियान

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-134, 'बर्मिंघम अभियान (1963)'

(ख) शार्पविले नरसंहार

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-135, 'शार्पविले नरसंहार, 1960'



Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

संघर्ष समाधान और शांति स्थापन (Conflict Resolution and Peace Building)

संघर्ष : सैद्धांतिक संरचना (Conflict: Theoretical Constructs)

संघर्ष एवं अवधारणा (Meaning and Concept of Conflict)



परिचय

हमारे दैनिक जीवन में कई प्रकार के संघर्ष देखे गये हैं, जैसे—छोटा या बड़ा संघर्ष, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संघर्ष। संघर्ष का रूप एक व्यक्ति से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक माना गया है। संघर्ष का रूप बाहरी या आंतरिक भी हो सकता है। संघर्ष के रूप की तरह इसके क्षेत्र भी विभिन्न हो सकते हैं। संघर्ष की संकल्पना इसे हिंसा, विनाश, अक्षमता और तर्कहीनता द्वारा विषम परिस्थितियों की ओर ले जाती है। संघर्ष एक ऐसी स्थिति का निर्माण करता है, जिसमें दो या दो से अधिक पक्षों की समझ और व्यवहार एक-दूसरे से भिन्नता रखते हैं। इस प्रकार संघर्ष के आधार पर मतभेद माना गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

संघर्ष की परिभाषा

संघर्ष क्या है?—संघर्ष वह प्रक्रिया है, जिसमें दो या दो से ज्यादा लोगों के पास लक्ष्यों, मूल्यों या मुद्दों की स्थिति में अंतर होता है। संघर्ष कई स्तरों पर माना गया है। व्यक्तिगत स्तर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक संघर्ष के तीन आयाम माने गये हैं, जैसे कि व्यावहारिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक। व्यावहारिक आधार की अपेक्षा भावनात्मक, संज्ञानात्मक आधार में संघर्ष स्थिति के साथ चलता है। संघर्ष निवारण हेतु संघर्ष का रूप वास्तविक होना अनिवार्य माना गया है, इसलिए इसके निवारण हेतु प्रयास करना चाहिए। संघर्ष के विरोधी हित कई मुद्दों से जुड़े होते हैं, जैसे कि दुर्लभ संसाधन, उद्देश्यों से भिन्नता और हताशा आदि। संघर्ष की परिभाषा व्यवहार पर आधारित मानी गई है। कई संघर्षों में यदि

दोनों पक्ष संघर्ष निवारण को असंभव मानते हों तो वहाँ संघर्ष समाधान की गुंजाईश कम हो जाती है। कई संघर्षों में सैन्य समाधान नहीं मिलता। इसलिए अगर हिंसक आधार में परिवर्तित हो जाता है, तो संघर्ष के निवारण हेतु शक्तिशाली व्यवस्था न हो तो संघर्ष में मूल्यों के संरक्षण हेतु दोनों पक्ष बल का प्रयोग विरोधी पक्ष के लिए करते हैं।

संघर्ष के चरण

प्रमुख रूप से संघर्ष के चार चरण माने गये हैं—

1. अतःव्यक्तिगत
2. अंतर-व्यक्तिगत
3. अंतःसमूह
4. अंतर-समूह।

संघर्ष का जीवन चक्र

संघर्ष परिवर्तनशील है, इसलिए इसकी रोकथाम या प्रबंधन के लिए प्रयासों को संघर्ष के जीवन चक्र द्वारा समझा जा सकता है। संघर्ष की तेज गति के अनुसार इसे चक्रीय कहा गया है। तीव्रता यानी तेज गति से संकट या युद्ध की स्थिति में पहुँचना। संघर्ष के इन चक्रों को पुनः घटित होने से सकारात्मक शांति द्वारा संतुलित किया जा सकता है। संघर्ष-रोकथाम, संघर्ष-प्रबंधन और संघर्ष समाधान संघर्ष के तीन चरण माने गये हैं। संघर्ष रोकथाम का प्रयोग पहले चरण में किया जाता है। संघर्ष-प्रबंधन संघर्ष के व्यापक और हिंसक रूप लेने के बीच में प्रयोग किया जाता है। संघर्ष समाधान चरण उस समय अपनाया जाता है, जब संघर्ष के बाद संघर्ष की गति में थोड़ी कमी हो जाती है। संघर्ष की तीव्रता के पांच स्तर माने गये हैं—स्थिर शांति और अस्थिर शांति, खुला संघर्ष, संकट और युद्ध।

2 / NEERAJ : संघर्ष समाधान और शांति स्थापन

1. स्थिर शांति के दोनों पक्षों में किसी भी मुद्दे पर तनाव कम पाया जाता है।
2. अस्थिर शांति में तनाव में बढ़ोत्तरी होती है।
3. खुले संघर्ष में दोनों स्वतः ही संघर्ष को निपटाने का प्रयास करते हैं।
4. संघर्ष में दोनों पक्षों से युद्ध शुरू होने में पहले की स्थिति।
5. युद्ध पाँचवाँ स्तर माना गया है, जिसमें दोनों पक्ष आक्रामक हो जाते हैं।

इसी प्रकार इस स्तर को विपरीत दिशा के रूप युद्ध से स्थिर शांति तक अपनाते हैं।

संकट की रोकथाम

संघर्ष के शांतिपूर्ण ढंग से समाधान के लिए यानी संकट की रोकथाम के लिए कई प्रयास किये जाते हैं। यह प्रयास संघर्ष के गंभीर रूप लेने से पहले, स्थिर और अस्थिर शांति के दौरान संघर्ष की रोकथाम के लिए प्रभावी माने जा सकते हैं। इन उपायों में संरचनात्मक प्रयास स्थिर शांति अवधि के दौरान प्रभावी होते हैं क्योंकि प्रारंभिक चरणों में विरोधी पक्षों के बीच विरोध निम्न स्तर का होता है, इसलिए संरचनात्मक प्रयासों द्वारा दोनों पक्षों की सहमति की संभावना भी देखी जाती है। अस्थिर शांति की अवधि में प्रत्यक्ष रोकथाम के उपायों में छोटे लक्ष्यों को ध्यान में रखा जाता है। इससे संघर्ष मुद्दों पर आधारित हो जाता है क्योंकि प्रत्यक्ष रूप से रोकथाम के प्रयासों में संस्थाएं औपचारिक या अनौपचारिक रूप से शामिल हो सकती हैं। संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव बुतरस-बुतरस घाली द्वारा रोकथाम की कूटनीति की परिभाषा इस प्रकार है, “कूटनीतिक उपायों का प्रयोग विवादों को बढ़ने से रोकने के लिए किया जाता है, इन विवादों को सशस्त्र संघर्ष से रोकने के लिए किया जाता है।”

संघर्ष प्रबंधन

फ्रैंड टैर के अनुसार, संघर्ष प्रबंधन द्वारा संघर्ष को हल किए बिना ही संघर्ष को कम किया जाता है। निकलस स्वान्सट्रॉम के अनुसार, संघर्ष प्रबंधन को संवाद के प्रारूप में विनाशकारी से रचनात्मक रूप में बदलाव के अर्थ में समझना चाहिए। विलियम जर्टमैन के अनुसार, संघर्ष को राजनीतिक स्तर पर समाधान हेतु छोड़ देना चाहिए।

संघर्ष प्रबंधन और संकट प्रबंधन का प्रयास संघर्ष के युद्ध में परिवर्तित होने से पहले प्रयोग करना चाहिए। इन उपायों में सैन्य बलों की कमी, तीसरे पक्ष का हस्तक्षेप, सामान्य विश्वास के उपायों का औपचारिक या अनौपचारिक संचार को शामिल किया गया है, जैसे कि संयुक्त राष्ट्र बहुराष्ट्रीय संगठन का इस्तेमाल में वृद्धि होती जा रही है।

संकट प्रबंधन

संकट प्रबंधन को युद्ध होने, तीव्रता तक पहुँचने की स्थिति में छोटी अवधि को ध्यान में रखते हुए अपनाया जाता है। हालांकि संकट प्रबंधन में अल्प समय में संघर्ष प्रबंधन की अपेक्षा कड़े नियम प्रयोग में लाए जाते हैं, जैसे—संघर्ष राष्ट्र या नारों द्वारा तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप के रूप में क्योंकि युद्ध के दौरान अन्य की अपेक्षा सैन्य साधनों को प्राथमिकता दी जाती है। सैन्य साधनों द्वारा इन उपकरणों का उपयोग विरोधी की लड़ने की इच्छा यानी क्षमता को कम किया जाता है। परिणाम स्वरूप दोनों पक्ष संघर्ष को समाप्त करना चाहते हैं या बाहरी तीसरी शक्ति द्वारा शांति स्थापना करना चाहते हैं।

संघर्ष समझौता

संघर्ष समझौते में सीधे रूप से रणनीतियों के तहत हिंसा को समाप्त करना है। असंगत हितों, दुर्लभ संसाधनों या शक्ति के लिए संघर्ष, संघर्ष समझौता के अंतर्गत आते हैं। नव-यथार्थवादी लेखों द्वारा शून्य योग खेल को शामिल पक्षों के हितों और संघर्ष-तीव्रता के भाग के आधार पर तोड़ा जा सकता है। शांतिपूर्ण उपायों में संघर्ष समझौता दीर्घ समय के लिए होता है, जबकि प्रतिरोधन उपाय अल्प समय के लिए होते हैं। प्रतिरोधी उपाय सैन्य, राजनीतिक आर्थिक प्रतिबंध माने गये हैं, जबकि संवाद, मध्यस्थता या सहूलियत शांतिपूर्ण उपाय हैं।

संघर्ष समाधान

संघर्ष के विनाशकारी रूप से बहार निकलने के लिए संघर्ष समाधान का उपाय अपनाया जाता है। संघर्ष समाधान ऐसे समाधान को दर्शाता है, जो संघर्ष को बिना हल किये इसे कम करने यानी सीमित करने हेतु प्रयोग में लाया जाता है। हालांकि बिना युद्ध किये भी प्रत्येक मुद्दों पर मतभेदों को हल किया जा सकता है; जैसे कि क्यूबा का मिसाइल संकट, साइप्रस का विवाद, चीन और किर्गिस्तान चीन के बीच सीमा विवाद आदि।

संघर्ष रूपान्तरण

संघर्ष रूपान्तरण एक नई अवधारणा के रूप में यह माना गया संघर्ष की एक अलग घटना की अपेक्षा समाज के विकास और अभ्युदय के लिए अनिवार्य अंग है। जैसे कि महिलाओं का वोट अधिकार इसलिए संघर्ष के सकारात्मक पहलू को माना गया है, जो कि अहिंसक भी हो सकता है। इस प्रकार संघर्ष परिवर्तन विशेष संघर्ष से मूल कारण को बदलने का प्रयास भी है। इस संघर्ष के संचनात्मक और व्यावहारिक पहलुओं द्वारा दोनों पक्षों के बीच तनाव और हिंसा को दूर करना चाहिए क्योंकि हिंसा से किसी का हित नहीं होता। संघर्ष रूपान्तरण में तीसरा पक्ष दूसरे पक्षों की शत्रुता को दूर कर एक आपसी संबंध बनने में मदद करता है। इस प्रकार शांति प्रक्रिया द्वारा प्रत्यक्ष हिंसा के रूपों को रोका जा सकता है और शक्ति प्रक्रिया के आधार संरचनात्मक और व्यावहारिक माने गये हैं। इनकी व्यावहारिक प्रक्रिया द्वारा शांति स्थापित की जा सकती है।

शांति स्थापना

शांति स्थापना के अंतर्गत संघर्ष की तीव्रता को रोकने पर विशेष बल दिया जाता है। इसमें तीसरा पक्ष होता है, जो अन्य पक्षों में शांति स्थापित करने की कोशिश करता है। संघर्ष में तीव्रता कम होने पर शांति स्थापन की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। शांति स्थापना के प्रयासों में सफलता संघर्ष शांति दृढ़ता के चरण में पहुँचती है, यानी शांति स्थापना का लक्ष्य पूर्ण होता है। संघर्ष के रूप में तीव्रता के उपाय और तीव्रता के कम होने पर किये गये उपायों में वित्तीय और राजनीतिक आधार तीसरे पक्ष के रूप में देखे जाते हैं, जैसे—संयुक्त राष्ट्र अमेरिका।

संघर्ष की श्रेणियाँ

संघर्ष के स्रोत और श्रेणियों में विषयपरक और दृष्टिकोण पाए गये हैं। विषयपरक दृष्टिकोण द्वारा प्राथमिक रूप से विसंगति पर विचार किया गया है, जबकि उद्देश्यपरक दृष्टिकोण द्वारा प्राथमिक रूप से संगति पर विचार किया गया है, जो कि समाज के किसी भी रूप में संघर्ष की उत्पत्ति की खोज करता है। संघर्ष की दो मुख्य श्रेणियाँ अहिंसक संघर्ष और हिंसक संघर्ष मानी गई हैं। अहिंसक संघर्ष की अपेक्षा हिंसक संघर्ष की अध्ययन सामग्री और आँकड़े अधिकांश युद्ध के बारे में पाए गये हैं।

अहिंसक संघर्ष

अहिंसक संघर्ष में विरोधी पक्षों द्वारा एक-दूसरे के विरुद्ध बल का प्रयोग नहीं किया जाता, यानी इसे एक पक्ष द्वारा देखा या पहचाना जा सकता है। अहिंसक संघर्ष को अभिव्यक्त संघर्ष प्रक्रिया भी कहा गया है। अहिंसक संघर्ष में दोनों पक्ष प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में सिर्फ अपने असंगत लक्ष्यों की धारणा को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं क्योंकि अहिंसक संघर्ष में एक पक्ष सीधे रूप से अपनी माँगों को रखता है, जो दूसरा पक्ष ऐसी माँगों से अवगत है। इसलिए वह अपने स्थितिगत मतभेदों को माँगों के रूप में व्यक्त करता है। इस अव्यक्त संघर्ष को संघर्ष के विकास का रूप दिया है, जिसमें दोनों दलों, समूहों या राज्य द्वारा मूल्यों, मुद्दों और उद्देश्यों पर सवाल उठाया जाता है, जो राष्ट्रीय प्रासंगिकता के माने गये हैं, परंतु सीधे संघर्ष में दोनों पक्ष एक ऐसे मोड़ पर पहुँचते हैं, जहाँ एक पक्ष के होने की संभावना अधिक रहती है, जैसे कि आर्थिक प्रतिबंध।

हिंसक संघर्ष

हिंसक संघर्ष में दोनों पक्ष हिंसक रूप ले लेते हैं और दूसरे पक्ष को नुकसान, चोट या नष्ट कर अपना लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास करते हैं क्योंकि “प्रतिक्रिया के रूप में हिंसा तब जन्म लेती है, जब कुछ मूलभूत आवश्यकताएँ और माँग से ज्यादा निराशा होती है। हिंसक संघर्ष की विशेषताएँ हैं—बल प्रयोग, शारीरिक क्षति और लोगों की हत्या। युद्ध के कई कारण माने गये हैं, जैसे कि क्षेत्रीय संघर्ष, जातीय-राजनीतिक संघर्ष या सत्ता के लिए संघर्ष। शीत युद्ध से पहले और बाद में विश्व में हिंसक संघर्षों के ढांचे

में परिवर्तन आया है। कई विद्वानों द्वारा युद्ध के संरचनात्मक रूपांतरण की संरचना को सामने रखा गया है। शीत युद्ध को कम तीव्रता वाला संघर्ष, तीसरे प्रकार का युद्ध या नया युद्ध कहा गया। सामूहिक हिंसक संघर्ष के मुख्य तत्व इस प्रकार हैं—युद्ध में दो विरोधी संगठित व सैन्य बलों की लड़ाई, प्रणालीबद्ध होना, एक लंबी अवधि, तीव्रता यानी विनाश और मानव हत्याएँ।

संघर्ष के मुद्दे

संघर्ष के मुद्दे विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ, पैसे, संपत्ति, राजनीतिक और विचार हो सकते हैं। ये धन, शक्ति और प्रतिष्ठा का रूप भी माने जाते हैं। इसके मुख्य तीन रूप हैं, क्षेत्र और सीमा संघर्ष, अल्पसंख्यक जातीय और सत्ता संघर्ष और संसाधनों के लिए संघर्ष।

क्षेत्र और सीमा संघर्ष

राजनीतिक संघर्ष के अंतर्गत कई मुद्दे देखे गये हैं, जैसे कि क्षेत्रों को जीतना, उनमें विवाद, टकराव, युद्ध, क्षेत्रीय विस्तार आदि। क्षेत्र और सीमा संघर्ष का एक रूप अलगाव क्षेत्र के टुकड़ों द्वारा राज्य की संप्रभुता से उस क्षेत्र में रहने वाले लोगों, क्षेत्र और उसके लोगों पर संप्रभुता के साथ नए आजाद राज्य की स्थापना शामिल है। हालाँकि क्षेत्रीय तथ्य संसाधनों या जातीय अल्पसंख्यकों से जुड़े हैं, जैसे कि पाकिस्तान, 1971 में बंगलादेश। सीमा विवाद का “संघर्ष के स्थिर रूप है क्योंकि इन विवादों में दो आसानी से पहचाने जाने योग्य पक्षों के बीच भौतिक विभेद स्पष्ट होते हैं” दर्शाया गया है।

अल्पसंख्यक, जातीय और सत्ता संघर्ष

अल्पसंख्यक संघर्ष जातीय संघर्ष के साथ-साथ सामाजिक रूप से अल्पसंख्यक हो सकता है। इसमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विवाद भी हो सकते हैं। इन संघर्षों की किस्म में अल्पसंख्यकों की राजनीतिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और स्वशासन संबंधी माँगों को मान लिया जाता है क्योंकि इनका सक्रिय विरोध अल्पसंख्यकों द्वारा संगठन और क्षेत्रीय विशेष का उपयोग करने की माँगों पर आधारित होता है। इसलिए इनका रूप अलगाववादी युद्ध के समान हो सकता है। जातीय संघर्षों की उत्पत्ति की पहचान में जोड़-तोड़ करना भी माना गया है क्योंकि जाति या नस्ल समूह सीधे रूप से सरकार पर भरोसा नहीं कर सकते।

संसाधनों के लिए संघर्ष

संसाधनों के लिए संघर्ष में मुख्य मुद्दे माने गये हैं। संसाधनों का विवरण, उपयोग, आवश्यकता, इच्छा, प्रबंधन के कारण संसाधनों की पहुँच पर नियंत्रण माने गये हैं। हालाँकि संसाधनों के कारणों में संसाधनों की दुर्गमता, दो यादों से अधिक समूहों द्वारा संसाधन साझा करना। समूहों की तुलनात्मक शक्ति, वैकल्पिक स्रोतों पर पहुँच में आसानी माने गये हैं। इनमें सबसे प्रमुख कारण संसाधनों की दुर्लभता माना गया है, जैसे कि पर्यावरण हास को संघर्ष का प्रमुख मुद्दा माना गया है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. संघर्ष के अर्थ की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—संघर्ष के सर्वव्यापी और व्यापक प्रकृति के कारण कई अर्थ पाए गये हैं। सामान्य रूप में संघर्ष विरोधी हितों का नतीजा माना गया है। संघर्ष को एक ऐसी स्थिति माना गया है, जिसके अंतर्गत दो या दो से अधिक पक्षों के असंगत उद्देश्य पाए गये हों, उनके समक्ष तथा व्यवहार उस असंगति के अनुसार हों। संघर्ष को एक प्रक्रिया माना गया है, जिसमें दो या दो से अधिक पार्टियों के पास लक्ष्य, मूल्य और मुद्दों की स्थिति में अंतर पाया जाता है। संघर्ष छोटा या बड़ा हो सकता है। संघर्ष का स्तर भी व्यक्तिगत स्तर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो सकता है। हालांकि संघर्ष समूहों में आंतरिक या बाहरी रूप में भी पाया जाता है। मुख्य तौर पर संघर्ष के तीन आधार और कई स्तर माने गये हैं। स्तरों में मुख्य तौर पर व्यक्तिगत समूह, अंतर समूह, संगठनात्मक समूह, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर। जबकि आयामों में व्यावहारिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक संघर्ष हो सकता है।

संघर्ष का अर्थ मात्र संघर्ष के व्यवहार की व्यापकता पर ध्यान केंद्रित कर ही दर्शाया जा सकता है क्योंकि संघर्ष व्यवहार के अलावा भी बहुत कुछ दर्शाता है। संघर्ष के तीनों आयामों की संकल्पना इस प्रकार की स्थिति पर विचार करने के लिए दबाव डालती है। इसके अंतर्गत व्यक्ति, समूह, संगठन या राष्ट्र कई तत्वों पर निर्भर करते हैं; जैसे कि असंगत लक्ष्य, लक्ष्यों की संरचना, बातचीत और उद्देश्य का रूप। भावनात्मक और संज्ञानात्मक अवधारणाएँ संघर्ष की उस स्थिति का निर्माण करते हैं, जिसके अंतर्गत संघर्ष के दौरान किये जाने वाले सभी कार्य पाए जाते हैं। संघर्ष से निपटने या प्रबंधन करने वाले प्रत्येक उपाय से पहले इस बात को जानने की आवश्यकता है कि कोई भी संघर्ष, किसी भी रूप में वास्तविकता से संबंधित हो। इसलिए संघर्ष की संकल्पना को जानने से पहले यह ज्ञान अनिवार्य माना जाता है कि इसके प्रबंधन का तरीका कैसा होना चाहिए।

संघर्ष के अंतर्गत संघर्ष को विरोधी हितों का नतीजा माना गया है, यानी ये हित विभिन्न मुद्दों या कारकों से जुड़े हो सकते हैं, जैसे कि संसाधनों में कमी, उद्देश्यों में भिन्नता, निराशा आदि। संघर्ष के अंतर्गत सैन्य क्षेत्र के बाहर के संघर्ष भी शामिल हैं, जिनका आधार व्यवहार माना गया है क्योंकि संघर्ष और विरोधी के इरादों को व्यक्तिपरक धारणाओं के अनुसार परिभाषित किया जाता है। इसलिए संघर्ष की संकल्पना की धारणा को मूल अवधारणा के रूप में शामिल किया जाना चाहिए। हालांकि एक संघर्ष में समझौते की काफी संभावना पाई जाती है, परंतु अगर दोनों पक्ष संघर्ष को निपटाने या समाधान को असंभव मानकर राजी नहीं होते या दोनों विरोधी पक्षों का एक-दूसरे पर विश्वास न हो, तो संघर्ष में समझौते का कोई मोल नहीं रहता, यानी ऐसी स्थितियों में संघर्ष के समझौते

मददगार साबित नहीं होते। मानव विवाद आमतौर पर धर्म, मूल्य और विश्वास आदि तत्वों के कारण होते हैं। ज्यादातर संघर्षों में सैन्य समाधान नहीं मिलता। सरल शब्दों में, संघर्ष एक ही काल में दो या दो से अधिक पक्षों के बीच मुद्दों पर धारणा से प्रेरित अंतर माना गया है। एक आम या छोटा संघर्ष हिंसक रूप धारण कर लेता है, जब संघर्ष के समाधान या प्रबंधन के लिए कोई शक्तिशाली या प्रभावी नियंत्रित प्रणाली न हो या फिर दोनों पक्ष अपनी मनमानी करें, यानी बल का प्रयोग कर एक पक्ष या दोनों पक्ष अपने हितों के लिए एक-दूसरे पर चोट पहुँचाने, नुकसान करने या मौत के घाटा उतारने के लिए तीव्र रूप धारण कर लें। संघर्ष के मुख्य रूप से चार चरण बताए गये हैं। हालांकि एक ही समय में एक व्यक्ति संगठन या राष्ट्र एक से अधिक चरणों का हिस्सा होता है, जैसे कि—

1. **अंतःव्यक्तिगत**—अंतःव्यक्तिगत के अंतर्गत एक व्यक्ति, संगठन या राष्ट्र का आंतरिक संघर्ष होता है। इसके अनुसार एक व्यक्ति स्वयं निर्णय नहीं ले सकता, विपक्ष का होना अनिवार्य है। इसलिए उनके विचारों के आधार पर उनकी समस्या का समाधान किया जाता है।

2. **अंतर-व्यक्तिगत**—अंतर-व्यक्तिगत के अंतर्गत दो या दो से अधिक व्यक्तियों, संगठनों और राष्ट्रों के बीच संघर्ष होता है। इसमें दो विपक्षों के बीच वाद-विवाद पाया जाता है।

3. **अंतःसमूह**—अंतःसमूह के अंतर्गत समूह के सदस्य आते हैं, जो कि एक ही समूह से संबंधित होते हैं, यानी संघर्ष एक ही समूह के सदस्यों के बीच होता है।

4. **अंतर-समूह**—अंतर-समूह में दो या दो से अधिक समूहों में संघर्ष पाया जाता है। ये दो समूह या राष्ट्र संघर्ष भिन्नता रखते हैं। अंतर-समूहों में संघर्षों के मुद्दे ज्यादातर जातीयता, नस्ल या संसाधनों पर आधारित होते हैं या फिर अपनी पहचान को लेकर।

इस प्रकार उपर्युक्त चर्चा से हम यह कह सकते हैं कि संघर्ष की परंपरागत परिभाषा के अनुसार संघर्ष को विरोधी हितों का नतीजा माना गया है।

प्रश्न 2. संघर्ष का जीवन चक्र क्या है? संकट की रोकथाम संघर्ष के प्रबंधन से किन अर्थों में भिन्न है?

उत्तर—संघर्ष एक अस्थिर, परिवर्तनशील और गतिशील स्थिति मानी गई है क्योंकि संघर्ष के जीवन चक्र में तीव्रता का यह स्तर कई रूप लेता है, इसलिए संघर्ष की रोकथाम के लिए संघर्ष के प्रबंधन के लिए विभिन्न प्रकार के तरीकों और रणनीतियों को लागू करने के लिए संघर्ष के जीवन चक्र का ज्ञान अनिवार्य माना गया है। संघर्ष के बदलते स्वरूपों के कारण कई प्रकार के सुझाव और तरीके प्रस्तुत किये जाते हैं। संघर्ष की गतिशीलता के कारण चक्रीय नाम दिया गया है। गतिशीलता यानी तीव्रता का अर्थ स्थिरता की स्थिति में संकट या युद्ध की स्थिति में पहुँचाना है। हालांकि इस स्थिति से निकलने के बाद अस्थिर शांति की स्थिति आती है, यानी संघर्ष का जीवन चक्र इसी प्रकार चलता रहता है।